अध्यक्ष डीटर एफ. उकडोर्फ द्वारा
प्रथम अध्यक्षता में द्वितीय सलाहकार

भाई, मैं वचनबद्ध हूं

दो भाई एक छोटे से टीले के ऊपर खड़े थे जहां से नीली झील का पानी दिखाई पड़ता था । यह एक प्रसिद्ध डुबकी लगाने का स्थान था, और दोनों भाई हमेशा वहां से छलांग लगाने की बात किया करते थे—जैसा वे दूसरों को करता देखते थे ।

बेशक वे छलांग लगाना चाहते थे, लेकिन दोनों में से कोई भी पहले नहीं कूदना चाहता था । टीले की ऊंचाई ज्यादा नहीं थी, परन्तु इन दोनों लड़कों को यह बहुत अधिक प्रतीत होती थी जब वे छलांग लगाने के लिये आगे झुकते थे—और उनकी हिम्मत कम हो जाती थी ।

आखिरकर , एक भाई ने टीले के किनारे पर एक पैर रखा और निश्चिपूर्वक आगे बढ़ गया । उसी क्षण उसका भाई फूसफूसाया, ''शायद हमें अगली गर्मियों तक प्रतिक्षा करना चाहिये ।''

पहले भाई की हिम्मत, यद्यपि, उसे आगे की ओर खींच रही थी । ''भाई,'' उसने जवाब दिया, ''मैं वचनबद्ध हूं !''

उसने पानी में छलांग लगाई और विजयी शोर के साथ पानी की ऊपरी सतह हिल गई । दूसरा भाई ने तुरन्त वैसे ही किया । बाद में, प्रथम लड़के के पानी में छलांग लगाने से पहले कहे गये आखिर शब्दों पर वे दोनों हंसने लगेः ''भाई, मैं वचनबद्ध हूं ।''

वचनबद्ध होना कुछ-कुछ पानी में छलांग लगाने के समान है । या तो आप वचनबद्ध होते हैं या आप नहीं होते । या तो आप आगे बढ़ते हैं या आप स्थिर रहते हैं । कोई बीच का रास्ता नहीं है । हम सभी निर्णायक क्षणों का समाना करते हैं जोकि हमारे आगे के जीवन को बदल देता है । गिरजाघर के सदस्य होने के नाते, हमें अपने-आपसे पूछना चाहिए, ''क्या मुझे छलांग लगानी चाहिए या ऐसे ही छोर पर खड़े रहना है ? क्या मुझे आगे बढ़ना है या पानी का तापमान अपने पैर से छुकर देखना चाहिए ?''

कुछ पाप इसलिए होते हैं क्योंकि हम गलत करते है, अन्य पाप इसलिए होते हैं क्योंकि हम कुछ भी नहीं करते हैं । सुसमाचार के प्रति केवल वचनबद्ध होना कुछ ऐसा ही है जो निराशा, अप्रसन्नता, और दोषी होने की ओर ले जाता है । यह हम पर लागू नहीं होता है क्योंकि हम अनुबन्धित लोग हैं । हम प्रभु से अनुबन्ध करते हैं जब हम बपतिस्मा लेते और जब हम प्रभु के घर में प्रवेश करते हैं । पुरुष प्रभु से अनुबन्ध बनाते हैं जब वे पौरोहित्य के लिए नियुक्त होते हैं । कुछ भी अधिक महत्वपूर्ण नहीं हो सकता है सिवाए उस वचन को पूरा करने के जिसे हमने प्रभु के साथ बनाया है । स्मरण करें पुराने नियम में राहेल और लिआ के जवाब को जो उन्होंने याकूब को दिया था । यह साधारण और सरल और उनकी वचनबद्धता को दर्शाता थाः ''अब जो कुछ परमेश्वर ने तुझ से कहा है, वही कर''(उत्पत्ति 31:16) ।

वे जो जिस प्रकार की वचनबद्धता करते हैं उसी प्रकार की गवाही, खुशी, और शान्ति की आशीषों को पाने की कामना कर सकते हैं । स्वर्ग के झरोखे उन के लिए उसी प्रकार से खुल सकते हैं । क्या सोचने में यह मुर्खता नहीं लगती, ''अभी मैं अपने-आपको 50 प्रतिशत वचनबद्ध करूंगा, परन्तु जब मसीह का दूसरा आगमन होगा, तब मैं अपने-आपको 100 प्रतिशत वचनबद्ध करूंगा'' ?

प्रभु से अपने अनुबन्ध की वचनबद्धता हमारे धर्म-परिवर्तन का फल है । हमारे उद्धारकर्ता और उसके गिरजाघर से हमारी वचनबद्धता हमारे चरित्र का निर्माण करती और हमारी आत्मा को बल देती है ताकि जब हम मसीह से मिलते हैं, वह हमें गले लगाएगा और कहेगा, '' धन्य, हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास'' (मत्ती 25:21) ।

इरादे और कर्म के बीच में अन्तर है । वे जो सिर्फ वचनबद्ध होने का इरादा करते हैं वे हर बार बहाना ढूंढ सकते हैं । वे जो वास्तव में वचनबद्ध होते हैं दृढता से चुनौतियों का सामना करते हैं और अपने-आपसे कहते हैं, ''हां, कि यह देर करने का बहुत अच्छा कारण हो

सकता है, परन्तु मैंने अनुबन्ध किया है, और मैं वही करूंगा/गी जिसे करने के लिए मैं वचनबद्ध हूं ।'' वे धर्मशास्त्रों में अपने स्वर्ग के पिता के मार्गदर्शन को सच्चाई से खोजते है । वह अपनी गिरजाघर की बुलाहटों को स्वीकारते और बढ़ाते है । वह अपनी सभाओं में जाते हैं । वह अपनी घर या भेंट करने वाली शिक्षा देते हैं ।

एक जर्मन कहावत कहती है, ''वादा पूरे चन्द्रमा के समान है । यदि उसे रखा न जाये, वह दिन प्रति दिन फीका पड़ता जाता है'' । अन्तिम-दिनों के सन्तों का यीशु मसीह का गिरजाघर के सदस्य होने के नाते, हम शिष्यता के पथ पर चलने के लिए वचनबद्ध हैं । हमने अपने उद्धारकर्ता के उदाहरण का अनुसरण करने के लिए वचनबद्ध हैं । कल्पना करें कि कैसे संसार आशीषित और अच्छाई के लिए परिवर्तन होगा जब प्रभु के गिरजाघर के सभी सदस्य अपनी वास्तविक योग्यता के अनुसार जीवन जीऐंगे—अपनी आत्मा की गहराई से परिवर्तित और परमेश्वर के राज्य को बनाने के लिए वचनबद्ध रहेंगे ।

कुछ उसी तरह से, हममें से प्रत्येक को एक बिन्दू पर खड़े होकर पानी की ओर देखकर निर्णय लेना है । यह मेरी प्रार्थना है कि हमारे पास विश्वास हो, आगे बढ़ें, अपने भय का और शंकाओ का उत्साह के साथ सामना करें, और अपने आपसे कहें, ''मैं वचनबद्ध हूं !''

इस संदेश से सीखाना

''सीखने वालों को सुसमाचार नियमों को समझाने का एक तरीका है उन्हें चित्र बनाकर सीखना । चित्र उन्हें खोजने में और उनको समझने और सुसमाचार की कहानियों और नियमों को स्पष्टता से महसूस करने की अनुमति देता है'' (*Teaching, No Greater Call* [1999], 166) । छन्द को पढ़ने के लिए विचारों, सुसमाचार के वचनबद्धता के नियमों की चर्चा करें, और फिर जो ऐसा करने का इच्छुक हैं उनसे सुसमाचार गतिविधि का चित्र बनाने के लिए कहें जो वचनबद्धता दर्शाता हो । बच्चों को चित्र बनाने में मदद की जरूरत हो सकती है ।

युवा

यही मैं उसे दे सकती हूं

एलिसा हेनसन द्वारा

मैं बहुत दबाव में थी कि गर्मियों में जो मैं करना चाहती हूं उन चीज़ों को करने के लिए भुगतान मैं कैसे करुगीं : कक्षाएं, कर्मशालाएं, गार्मियों के शिविर, और इत्यदि । मैंने सोचा मैं रो पडुंगी । तब मुझे वे सब चीजें याद आई जिन्हें मुझे प्रभु में भरोसा और विश्वास करने के लिए सीखाया गया था । मैंने प्रभु के हाथ में परिस्थिति रखने का निर्णय किया और भरोसा किया मानो यह उसकी ही मर्जी है, तो वही रास्ता निकलेगा ।

कुछ ही समय के भीतर, मेरी मां को मेरी नौकरी का वह बिना भुगतान हुआ एक चेक मिला जो यह मुझे साल के शुरु में मिला था, दूसरे ही दिन मुझे एक प्रतियोगिता में दूसरा स्थान पाने पर नकद ईनाम मिला था । यह मेरी महान गवाही हैं कि परमेश्वर जीवित है, कि वह मुझे से प्रेम करता और मेरा ध्यान करता है और जरूरत को पूरा करता है ।

मैं आभार और अपने स्वर्गीय पिता और उद्धारकर्ता के प्रति प्रेम से भर गयी । मुझे लगा जैसे कि मैं रो पडुंगीं ! अपना आभार दिखाने, सर्वोत्तम रूप से परमेश्वर की महिमा करने, और उस अनुभूति को बांटने का मैं इन्तजार करती थी । दूसरे लोगों ने इसे गीत बनाकर, कविता लिखकर या चित्र बनाकर किया है, परन्तु इन सब चीजों को करने में मैं असर्मथ महसूस करती थी । मैंने महसूस किया केवल एक चीज मैं कर सकती थी जो उचित महिमा दे सकती है वह थी मेरा जीवन,—''विश्वासियों के लिये आदर्श'' बन जा (1 तीमुथियुस 4:12), अपना जीवन मसीह को दे दूं । वह इतना ही मांगता है, और यही मैं उसे दे सकती हूं ।

© 2011 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमतिः 6/10 । अनुवाद अनुमतिः 6/10 । *First Presidency Message, July 2011* का अनुवाद । Hindi । 09767 294

मन्दिर में आना और अपनी आशीषों के हक़दार होना

इस सामाग्री को पढ़ें और, जैसा उचित हो, उन बहनों के साथ इसकी चर्चा करें जिन से आप भेंट करती हैं । अपनी बहनों को मजबूत करने और सहायता संस्था को अपने जीवन का सक्रिय हिस्सा बनाने में मदद के लिए प्रश्नों का प्रयोग करें ।

विश्वास • परिवार • सहायता

बहनों, हम बहुत आशीषित हैं । उद्धारकर्ता इस गिरजाघर का मुखिया है । जीवित भविष्यवक्ता द्वारा हमें मार्गदर्शन मिलता है । हमारे पास पवित्र धर्मशास्त्र हैं । और पूरे संसार में हमारे पास कई पवित्र मन्दिर है जहां हम अपने स्वर्गीय पिता के पास वापस लौटने के लिये आवश्यक धर्मविधियों को पाने के लिए मदद पा सकते हैं ।

पहली बार हम अपने लिये मन्दिर जाते हैं । ''मन्दिर का प्राथमिक उद्देश्य,'' बाहर प्रेरितों के परिषद के एल्डर रॉबट डी. हेल्स, ने समझाया, ''कि सलेस्टियल राज्य में हमारे उत्कर्ष के लिए आवश्यक धर्मविधियां उपलब्ध करना है । मन्दिर धर्मविधियां हमारे उद्धारकर्ता की ओर हमारा मार्गदर्शन करती हैं और आशीषें देती है जोकि यीशु मसीह के प्रायश्चित के द्वारा आती हैं । मन्दिर सीखने का महानत्तम विश्वविद्यालय है जिसे मनुष्य जानता है, यहां हमें संसार की रचना के बारे में ज्ञान और बुद्धि मिलती है । इंडोवमेन्ट निर्देश मार्गदर्शन प्रदान करता हैं कि हमें यहां नश्वरता में जीवन कैसे बिताना चाहिए । ... धर्मविधि में निर्देशों की श्रंखला होती है कि हमें कैसे जीवन बिताना चाहिए और अनुबंध होते हैं जो हम उद्धारकर्ता का अनुसरण करते हुए धार्मिकता से जीवन जीने के लिए बनाते हैं ।''[1]

परन्तु मन्दिर की हमारी सेवा वहीं पर समाप्त नहीं होती हैं । अध्यक्ष बॉएड के. पैकर, बाहर प्रेरितों के परिषद के अध्यक्ष, ने सीखाया थाः ''किसी के लिए प्रतिनिधि बनना जो पर्दे के उस पार चले गये हैं, आप उन अनुबन्धों को पहले ही जान लोगे जिसे आपने बनाया है । आपने अपने मन में उन महान आत्मिक आशीषों को मजबूत कर लिया होगा जो प्रभु के घर से संबंधित हैं । ... अनुबन्धों और धर्मविधियों के मध्य में वे आशीषें हैं जो आप पवित्र मन्दिर में पा सकते हैं ।''[2]

मन्दिर में आना और फिर से आना । मन्दिर अनुबन्धों को बनना और रखना हमारी सभी महान आशीषों को पाने का स्रोत्र है— अनन्त जीवन का ।

बाबरा थॉमसन, सहायता संस्था के जनरल अध्यक्षता में द्वितीय सलाहकार ।

धर्मशास्त्रों में से

यशायाह 2:3; 1 कुरिन्थियों 11:11; प्रकाशितवाक्य 7:13–15; सिद्धान्त और अनुबन्ध 109

हमारे इतिहास से

सहायता संस्था की बहनों से उनकी सभाओं में भविष्यवक्ता जोसफ अक्सर बात करते थे । नावू मन्दिर के निर्माण के अर्न्तगत, भविष्यवक्ता ने बहनों को मन्दिर धर्मविधियां के द्वारा अधिक ज्ञान पाने के लिये तैयार करते हुए, उन्हें सिद्धान्त में र्निदेश दिये थे । 1842 में उसने मरसी फिल्डंग थॉमस से कहा था कि इंडावमेन्ड ''आपको अन्धकार से अद्‌भूत ज्योति में ले आएगा ।''[3]

नावू के प्रस्थान से पहले तकरीबन 6,000, अन्तिम-दिनों के सन्तों ने मन्दिर धर्मविधियां पाई थी । अध्यक्ष ब्रिगहम यगं ने (1801–77) कहा था, ''सन्तों का धर्मविधियां [मन्दिर की], को करने का ऐसा उत्साह, और उनकी सेवा करने की हमारे ऊपर ऐसी चिन्ता थी, कि मैंने अपना सबकुछ, दिन और रात, मन्दिर में प्रभु के काम के लिए लगा दिया, औसतन प्रतिदिन मैं चार घंटे से अधिक नहीं सोता था, और सप्ताह में एक बार घर जाता था ।''[4] मन्दिर के अनुबन्धों ने सन्तों की शक्ति और बल को दृढ़ किया था जब उन्होंने अपने शहर और मन्दिर को अनजान जगह की यात्रा के लिये छोड़ा था ।

विवरण

1. रॉबट डी. हेल्स, "Blessings of the Temple," *Liahona,* अक्टू. 2009, 14 ।
2. बॉएड के. पैकर, *The Holy Temple* (1980), 170, 171 ।
3. *Teachings of Presidents of the Church: Joseph Smith* (2007), 414 ।
4. *Teachings of Presidents of the Church: Brigham Young* (1997), 299 ।

मैं क्या कर सकती हूं ?

1. जिनसे मैं भेंट करती हूं उनके ''मन्दिर आने के'' इरादे को मजबूती देने के लिए मैं क्या अनुभव बाटूंगी ?

2. व्यक्तिगत रुप से मैं कैसे मन्दिर की आशीषों की हक़दार हो सकती हूं

अधिक सूचना के लिए, www.reliefsociety.lds.org पर जाएं ।

© 2011 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमतिः 6/10 । अनुवाद अनुमतिः 6/10 ।
Visiting Teaching Message, July 2011 का अनुवाद, जुलाई 2011 । Hindi । 09767 294